# नदियों को जोड़ने की खामख्याली

शैलेन्द्रनाथ घोष

**प्रधानमंत्री तथा उनकी इस घोषणा पर मेज़ें थपथपाने वाले सांसद शायद सोचते हैं कि जब सड़कों का नेटवर्क बन सकता है, तो नदियों का क्यों नहीं? इस सोच में देश के बुनियादी संसाधनों - मिट्टियों, नदियों, सागर-संगमों, पहाड़ों और जंगलों - के प्रति और जलवायु की तमाम विविधताओं के प्रति नासमझी ही झलकती है।**

देश की सारी प्रमुख नदियों को जोड़ने के वाजपेयी सरकार के संकल्प पर यदि अमल किया गया, तो यह इतिहास में सहस्राब्दि की सनक के रूप में दर्ज़ होगा। ऐसा इसलिए कि यह योजना सारी इकॉलॉजिकल, राजनैतिक, आर्थिक व मानवीय लागत को अनदेखा करती है और इसका आकार अभूतपूर्व है। दुनिया में कहीं भी आज तक इतने बड़े पैमाने की और इतनी पेचीदगियों से भरी परियोजना नहीं उठाई गई है।

प्रधानमंत्री तथा उनकी इस घोषणा पर मेज़ें थपथपाने वाले सांसद शायद सोचते हैं कि जब सड़कों का नेटवर्क बन सकता है, तो नदियों का क्यों नहीं? इस सोच में देश के बुनियादी संसाधनों - मिट्टियों, नदियों, सागर-संगमों, पहाड़ों और जंगलों - के प्रति और जलवायु की तमाम विविधताओं के प्रति नासमझी ही झलकती है।

यह सही है कि परिवहन की दृष्टि से नदियों के नेटवर्क की कल्पना करने वाले सर आर्थर कॉटन एक उम्दा इंजीनियर थे। इस बात में भी कोई संदेह नहीं कि अस्सी के दशक में इसी विचार को सिंचाई व बिजली के मकसद से प्रस्तुत करने वाले के.एल.राव भी विश्व विख्यात इंजीनियर थे। मगर यह भी सही है कि कई मर्तबा इंजीनियर व्यापक मुद्दों को अनदेखा कर देते हैं।

## कुछ सीधे-सादे सवाल

निर्णय लेने से पहले सरकार को कुछ अहम सवालों की जांच-पड़ताल करनी चाहिए थी- देश में वे कौन से इलाके हैं जहां पानी उनकी ज़रूरतों से अधिक है? उत्तर-पूर्वी भारत की ब्रह्मपुत्र घाटी के अलावा क्या अन्य कोई ऐसा क्षेत्र है? गंगा के पानी से पोषित जो प्रान्त बरसात में बाढ़ग्रस्त होते हैं, क्या वे गर्मियों में पानी के लिए नहीं तरसते? बाढ़ और सूखे के इस दुष्चक्र के पीछे बुनियादी कारण क्या हैं?

फिर, सिंचाई की प्रचलित धारणा कितनी सही है? धान और गन्ने के अलावा कौन-सी फसल है जिसे इतना अधिक पानी चाहिए? क्या यह सही नहीं है कि अन्य फसलों को लबालब सिंचाई की नहीं बल्कि मात्र नमी की ज़रूरत होती है? क्या अत्यंत किफायती सिंचाई के अलावा अन्य किस्म की सिंचाई से मिट्टी बरबाद नहीं होती? क्या एक ही साल में दो-तीन मर्तबा धान उगाना लवणीयता और बंजरपन को न्यौता नहीं है?

कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में बारिश की वैसी कम नहीं है, जैसी राजस्थान और गुजरात में है। फिर भी क्यों कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में ही अन्य राज्यों से पानी आयात करने की मांग इतनी मुखर है? क्या इसका कारण इन प्रान्तों के बड़े किसानों द्वारा अपनाया गया फसल चक्र नहीं है? जब नदियों को जोड़ने की इस योजना का कोई लाभ राजस्थान को नहीं मिलने वाला है, तो क्या राजस्थान को गया-गुज़रा क्षेत्र मानना होगा? क्या हमने राजस्थान में मिट्टी पर इंदिरा गांधी नहर के असर का आकलन किया है? हम इसकी बदौलत उत्पन्न हरियाली